

पाठ—34 युधिष्ठिर की चिंता

धृष्टद्युम्न ने आचार्य द्रोण को युद्ध में व्यस्त रखका और बचे हुए महारथियों के जयद्रथ को सुरक्षा प्रदान करने के कारण कौरव सेना तीन भागों में विभक्त होने के कारण कमजोर हो गई ।

सात्यकि के बाण द्वारा पांचालकुमार धृष्टद्युम्न के प्राण बचे ।

धृष्टद्युम्न ने युधिष्ठिर की रक्षा का भार अपने ऊपर ले रखा था ।

भीम आदि मार्ग में आने वाले अन्य सेनानियों का वध करते हुए अर्जुन की प्रतिज्ञा पूर्ति में सहायता कराने हेतु वहाँ पहुँच गए जहाँ अर्जुन और जयद्रथ का युद्ध हो रहा था ।

युद्ध के अंत तक आते—आते कर्ण और भीम में भी भयंकर युद्ध हुआ ।

कर्ण ने भीम को निहत्था बनाकर भी युद्ध करना प्रारंभ कर रख था लेकिन भीम भी पूरी शक्ति के साथ युद्ध कर रहा था ।